जैन संस्कृति की प्राचीन धरोहर: कंकाली टीला (मथुरा)

जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने में मथुरा नगरी के कंकाली टीले के महत्त्व को समझना होगा, जहाँ से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों से ज्ञात होता है कि वहाँ कितनी वैभवपूर्ण संस्कृति रही है। मथुरा से 700 जैन मूर्तियां प्राप्त हुईं। जिस स्थान पर 500 डाकुओं ने जम्बू स्वामी के चरणों में प्रायश्चित लेकर अपना जीवन समर्पित किया, ऐसी मथुरा नगरी हमारे लिए गौरवशाली है। यहाँ का कंकाली टीला एवम् प्राचीनकाल में निर्मित स्तूप भारतीय संस्कृति का विश्वकोष था। अतीत के गर्भ में विस्मृत, विलुप्त एवं विलुण्ढित इस महान संस्कृति के अवशेष समय–समय पर विद्वानों एवं पुरातत्व समीक्षकों के माध्यम से इसकी गौरवगाथा सुनाते रहे हैं। दूसरी सदी के सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ जी के जीवन की कोई घटना यहाँ घटित हुई होगी, तभी उनकी स्मृति में प्राचीनतम स्तूप की रचना हुई। चौदहवें तीर्थंकर अनन्तनाथ जी की पूजा में भी एक स्तूप बनाये जाने की किंवदंती है। मथुरा की कृषाणकालीन कलाओं में कंकाली टीले के स्तूप सर्वश्रेष्ठ हैं। इसे देवनिर्मित कहा गया है। तीर्थकल्प नामक ग्रन्थ में इसका विशेष वर्णन मिलता है। इसमें लिखा है कि तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ जी की स्मृति में कुबेर ने सुवर्ण से इसे बनाया था। तीर्थकल्प के कथानुसार यह स्तूप आठवीं सदी तक मौजूद था। बौद्ध स्तूपों से भी यह प्राचीन स्तूप था। सत्रहवीं सदी तक मथुरा में जैन कला विकास पर थी। कंकाली के प्रसिद्ध स्तूप के निर्माण की यह गौरवशाली पृष्ठभूमि थी।

मथुरा में आयगपट–तोरणद्वार वेदिका स्तंभ, द्वार स्तंभ आदि बहुत सी चीजें मिलती हैं, जिसमें आयगपट विशेष उल्लेखनीय है। आयगपट में अष्टमंगल बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रित है। शुंगकाल से लेकर गुप्तकाल तक इतनी विपुल जैन सामग्री अन्यत्र उपलब्ध नहीं हुई है। प्रथम सदी से पांचवीं सदी तक का काल मथुरा की मूर्तिकला का स्वर्ण युग ही था। महान आत्माओं की स्तुति में राजाओं, धनी व्यापारियों एवं जनसामान्य ने अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य के अनुसार मथुरा के आस–पास अनेक स्मारक, स्तूप, चैन्य–मठ आदि के निर्माण कराये। कालगति व बर्बर विदेशी आक्रमणों से प्राचीन भवन ध्वस्त होकर टीले के रूप में परिणित हो गये। इसमें मथुरा का कंकाली टीला भारत की प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थलों में माना जाता है। केन्द्रीय पुरातात्विक विभाग की विज्ञप्ति संख्या 700 एम.एस 110 एम.एस. 1927 दिनांक 27 अगस्त 1928 द्वारा यह संरक्षित स्थान घोषित कर दिया गया है। सूची में इसकी क्रम संख्या 325 है। वर्तमान में कंकाली नाम की देवी का छोटा–सा मंदिर होने से इसे कंकाली टीला बोलते हैं। इस टीले को प्रसिद्ध इतिहासकार डा० स्मिथ ने 500 फुट लम्बा और 350 फुट चौड़ा बताया है किन्तु अंग्रेज इतिहासकार कनिंघम ने इसकी लम्बाई–चौड़ाई क्रमशः 400 फुट एवं 300 फुट दर्शाई है। इसके उत्खनन में 47 फुट व्यास का ईटों का स्तूप और दो जैन मंदिर मिले हैं। किन्तु खुदाई के पूरे नक्शे आदि उपलब्ध नहीं है। कंकाली स्तूप का पुरातात्विक–सांस्कृतिक व धार्मिक महत्त्व इसलिए भी अधिक है कि यह एकमात्र जैन स्तूप उपलब्ध हैं। अन्यत्र स्तूपों की खोज अभी तक नहीं हो पायी है। यद्यपि बौद्ध स्तूप भारत में अनेकों स्थान पर खोजे गये हैं तथा विद्यमान हैं। यह रहस्य विचाराणीय है।

इस स्थान की कीर्ति का प्रधान कारण देव निर्मित जैन स्तूप का निर्माण है। वृहतकल्पभाष्य ग्रन्थ से इसके महत्त्व को आंका जा सकता है। देव निर्मित स्तूप के प्रभुत्व के विषय में बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म में कुछ संघर्ष हुआ था, किन्तु अन्त में जैनों का अधिकार स्थिर हुआ। दो जैन आचार्यों ने मथुरा में भूतरमक नामक स्थान पर विहार किया। उनकी साधना से कुबेरा नामक देवी बड़ी प्रसन्न हुई और जैन मुनियों की प्रेरणा से सोने का एक रत्न जड़ित स्तूप प्रकट (निर्मित) कर दिया, जिसमें तीन वेदिका, तीन छत्रों सहित शिखर, तोरण–माला, जिनबिम्ब, ध्वजा आदि मांगलिक चित्रों से युक्त था। इसमें मुख्य मर्ति सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर की थी, इस प्रकार कालांतर के ग्रन्थों में जैन संघ की मथुरा यात्रा, सुपार्श्वनाथ का स्तूप तथा अन्य देव स्थानों का वर्णन मिलता है। मान्यता यह है कि सर्वप्रथम एक स्तूप था कालांतर में उसकी संख्या पाँच हुई, तदन्तर छोटे–छोटे 527 स्तूप बन गये, जिनकी पूजा सत्रहवीं शताब्दी तक होती रही। 1583 ई. में साहू टोडरमल द्वारा 514 स्तूपों की प्रतिष्ठा की गई थी। तथा इससे पूर्व नौवीं सदी में एक पार्श्वनाथ जिनालय स्थापित हो चुका था तथा एक मूर्ति भगवान महावीर की भी स्थापित की गई थी। यह सब कार्य देवनिर्मित स्तूप कंकाली टीला तथा मथुरा चौरासी के आस–पास सम्पन्न हुए होंगे।

यह प्राचीन जैन स्थल भारतीय कला रत्नों की खान माना जाता है, जहाँ से सैंकड़ों की संख्या में वास्तु–कला के अवशेष तथा तीर्थंकर व देवी–देवताओं की मूर्तियां मिली हैं। कंकाली टीले का अतीत धर्म साम्राज्य का ज्वलन्त उदाहरण है। जैन संगठन तथा सामाजिक संरचना के दिग्दर्शन के लिए यह अप्रतिम स्मारक है। देवनिर्मित स्तूप तथा उस पर शुक्ल, पताका फहराना कुछ ऐसी गुत्थियाँ हैं, जिन पर और अधिक प्रकाश अपेक्षित है। इनसे शोध का ताना–बाना बुनना आपके हाथ है।